सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• कीर्ति वर्मा

सृजक-सृजन-समीक्षा

कीर्ति वर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

कीर्ति वर्मा का परिचय

नाम - कीर्ति प्रदीप वर्मा
शिक्षा - B.A.
विधा- छंद मुक्त गीत ग़ज़ल लघुकथा आदि
पता - माखननगर -बाबई जिला होशंगाबाद
फोन -7566948452
Email - keerti1408@gmail.com.

सम्मान

१-जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में भोपाल संभाग से प्रथम पुरुस्कार
2-हिंदी दिवस इंटर स्कूल निबंध प्रतियोगिता बी एच इ एल भोपाल द्वारा निरंतर तीन वर्ष तक प्रथम पुरस्कार
3 ताम्रकार समाज भोपाल द्वारा साहित्यिक गति विधियों के लिए सम्मानित
4-काव्य कोकिला सम्मान(शिव संकल्प साहित्य परिषद् होशंगाबाद
5 -मन् तुलसी सम्मान होशंगाबाद
6-शब्द शक्ति सम्मान (राष्ट्रिय कवि संगम भोपाल)
7-वुमन्स एम्पावर्ड अवार्ड(प्रतिमा रक्षा समिति व एंटी करप्शन ब्यूरो करनाल दवारा)
8-काव्य श्री सम्मान जे एम् डी प्रकाशन दिल्ली

प्रकाशन

नारी काव्य सागर-साझा संग्रह
भारत के श्रेष्ठ युवा कवि एवं कवियत्री-साझा संग्रह
सृजन शब्द से शक्ति का-साझा संग्रह
प्रतिबिम्ब-लघु कथा साझा संग्रह प्रकाशधिन
विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन

संस्था

अखिल भारतीय सहित्य परिषद
राष्ट्रीय कवि संगम
प्रभात परिषद
अखिल भारतीय मंचों पर काव्य पाठ
दूरदर्शन म प्र से प्रसारण

आत्मकथ्य

राजधानी भोपाल से छोटे से कस्बे बाबई(दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी) के जन्मस्थान)डोली मेंआई।नौकरी पेशा एकल परिवार से भरे पूरे व्यापारिक परिवार की बडी बह घूँघट में रह कर चूल्हाचौका, लीपना पोतना, चकिया चलाना और कूँए से पानी खींचने से लेकर कंडे थापने तक लेकर सभी काम सीखे।बिदाई के वक्त माँ की दी सीख शिकायत का मौका मत देना पल्लू में गाँठ बांध ली।

आसपास कीबहओं को चारदिवारी में कैद देख कर हॉबी क्लासेस और ब्यूटी पार्लर आरम्भ कियाऔर आकांक्षा संस्था आरम्भ की।

गांव की महिलाओं ने भी चौखट पार की, धीरे धीरे जागृति आयी, दोनों बेटियों को इंजीनियर(पुणे),सी ए(मुम्बई)तक पहचाने के बाद अंगुलियां मचल उठीं कलम उठाने को, विवाह से पहले अनेक निबंध प्रतियोगिताओं में राज्यस्तरीय पुरस्कार जीतने वाला दिमाग फिर उसी और दौड चला। परदादी के अवसान पर लिखी श्रदधांजलि से सभी की तारीफों से हौसला बढ़ा।अनेक पत्र पत्रिकाओं में कविताएं, कहानी, लेख, व्यंग आदि प्रकाशित होने लगे। दूर दर्शन, आकाशवाणी एवं विभिन्न मंचों से काव्य पाठ किया। अनेक पदों पर रहते हए समाज सेवा, पर्यावरण, नर्मदा बचाओ, बेटी बचाओ, नशा मुक्ति आदि पर कार्यरत।पति देव के व्यापार में बराबर से हिस्सेदारी देते हए, लेखन जारी है।पूरी यात्रा मे पतिदेव का भरपूर सहयोग रहा।समाज से जो पाया उसे लौटाकर जाने की तमन्ना है।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

"सृजक का सृजन"

महिला दिवस

कार्येषु मंत्री है तू
मैं हूं तेरा राजा,
कर्णेषु दासी है तू
घर है मेरी सत्ता,
भोजयेषु माता है तू
तू रह गई भूखी नहीं कहा,
शयनेशु रम्भा है तू
क्या तेरी मर्जी नहीं पता,
तू धर्मानुकूला रह
मैं पंछी उन्मुक्त गगन का,
तू क्षमा वान धारित्री सी
मेरे पापों को नहीं गिना,
आज दिवस इक तेरा है!!!
तू महिला दिवस खूब मना
तू महिला दिवस खूब मना

माँ

जाने क्यूँ ?
माँ,आजकल
बात बात में रोती है,
अँखियों की कोरों को
पल पल में भिगोती है।
जाने क्यूँ?
माँ, आजकल - - - -
स्कूल नहीं जाने को
रोती थी जब मैं,
दुलार के पुचकार के
मुझे छोड़ आती थी,
और कुछ मोती
आँचल में समोती
जाने क्यूँ?
माँ आजकल- - - -
लिपट कर रोयी थी
बिदाई पर अपनी,
धीरज बंधाती मुझको
और पापा को सम्हालती,
फिर जाने कितनी रातें
तकिया भिगोती
जाने क्यूँ?
माँ आजकल- - - -
अब जब भीलौटती हूं
बच्चों के साथ
ससुराल अपने
कहती नहीं कुछ बस,
अँखियां समंदर सी होती।
जाने क्यूँ?
माँ आजकल- - - -
लोहे सी थी कभी जो
पारे सी हो गयी
वक्त के थपेड़ों में
जाने कहाँ खो गयी
मेरी बूढ़ी माँ
अब हिम्मत खोती ।
जाने क्यूँ?
माँ, आजकल
बात बात में रोती है।

प्रेम-प्यार

श्वेत श्याम सपने सी थी
सब रंग थे बेकार,
दुनिया सतरंगी सी हो गयी
पाया जब से तेरा प्यार ।

सूनी जेठ दुपहरी सी मैं
चले उष्ण बयार,
सावन सी पुरवैया बहती
पाया जबसे तेरा प्यार।

केवल कोरा पन्ना थी मैं
कहीं न था श्रृंगार,
पूरा प्रेम ग्रन्थ मैं हो गई
पाया जब से तेरा प्यार।

बिन तेरे ओ मेरे साजन
दुनिया थी ये उदास,
कतरे से समंदर हो गयी
पाया जब से तेरा प्यार।

बाग बगीचा

बच्चों सुन लो एक कहानी
कहती थी जो मेरी नानी

बाग बगीचे वृक्ष घने थे
आंगन ही उपवन बने थे
निर्मल था नदियों का पानी
बच्चों सुन लो एक कहानी।

हम सब पर फिर स्वारथ छाया
कांक्रीट का जंगल बनाया
दूषित किया नदियों का पानी
वच्चो सुन लो एक कहानी ।

बच्चों अब तुम पेड़ लगाओ
वसुधा को फिर हरी बनाओ
व्यर्थ बहे न नलों का पानी।
बच्चों सुन लो एक कहानी।

सम्मोहन

तुम पूनम के इंदु से
मैं तो एक चकोर हूं।

तुम स्वाति की बूंद से
मै चातक सी प्यासी हूं।

तुम संदल के तरु प्रिय
मैं अमरलता सी दासीहूं।

जाने क्या सम्मोहन है तुझमे?
मैं खिंची डोर सी आती हूँ।

अब और न देर लगा कान्हा
मैं तेरे चरणों की दासी हूं।

हुनर

स्वछंद कल कल नदि का
समुन्दर में समा जाना।
समुन्दर में पडी सीप का
मोती बन जाना।
रिक्त वसुंधरा पर
नवांकुर ऊग आना।
कांटो में खिले पुष्प का
खुशबू बिखराना।

फुलों के आसपास
तितली का मंडराना।
चंदा के साथ साथ
तारों का टिमटिमाना।
दिनकर के आते ही
जगत का जाग जाना।
दुःख सुख में आँखों से
अश्कों का बह जाना।

फलों से लदी डाली का
धीरे से झुक जाना।
भाप बनी हर बूँद का
बदली बन बरसाना।
सबकी अपनी खासियत
सबकी अपनी विशेषता,
काश ऐसा हनर
इंसान भी सीखता।

शब्द

शब्दोंका सब खेल है
शब्दो का संसार
शब्द ही पहचान है
शब्द ही आधार।

शब्द ज्ञान हो जाये जिसे
वह साक्षर कहलाये,
और नहीं हो ज्ञान तो
वह अनपढ़ कहलाये।

प्रेम पगे दो शब्दों से
जीत लो संसार,
निर्वस्त्र अगर शब्द हों
तो बिगड़े ,बनते काज।

शब्दों की माला से ही
कविता बन जाये,
शब्दों के ताने बाने
इतिहास नया रच जायें।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आदरणीया कीर्ति जी

सादर नमन सहित सब से पहले तो **अनंत बधाई अंतस मन से**..

आप से मौन मुलाकात है मेरी इस अंतरा के माध्यम से..लेकिन आप के शब्दो की ध्वनि कानों में स्पष्ट है..

आप को आप के सम्मान और अपनी दोनों बेटियों को अच्छा जीवन देने के लिए और बेहतरीन जीवन सफर के लिए बहुत बहुत बधाई..

महिला दिवस बहुत सुन्दर रचना..खूब मना महिला दिवस..अधिकार है ये तो..

माँ...बहुत ही करुणामय..सच में..माँ तो माँ है और उनका बलिदान वो भी निःस्वार्थ..

प्रेम प्यार..ओहह बहुत खूब..क्या अच्छे से आप ने अहसास जताया है कि प्रेम साथ ही तो इंद्रधनुष नही तो कोरे बादल सा जीवन

बाग बगीचा..व्वाह व्व्वाह लाजवाब बाल रचना कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी..

सम्मोहन..सम्मोहित रचना..व्वाह कान्हा को समर्पित बेहतरीन रचना

हुनर..व्वाह व्वाह..काश वाकई ऐसा हुनर सब सीख ले जैसा आप लिखते है..लाजवाब

शब्द..सच मे सब से ताकतवर शब्द ही है..शब्द से क्या नहीं हो सकता..दिल जीत ले तो युद्ध हो जाये..

फिलहाल आप के शब्दों में रची रचनाओ से दिल जीत लिया है

आप को पुनः बधाइयाँ, सादर वंदन !

शीतल खंडेलवाल

2.

आदरणीय कीर्ति वर्मा जी आपका आज के एकल रचनाकार विशेषांक में ह्रदय से स्वागत है । आपका संक्षिप्त परिचय से ज्ञात होता है कि आप कितने सम्रद्ध हैं अपनी विभिन्न विधाओं में । आपने अपनी योग्यता से कितने सम्मान अर्जित किये है । आपके विभिन्न प्रकाशन आपकी लगन और मेहनत से किये गये लेखन को प्रमाणित करता है । दूरदर्शन व अखिल भारतीय मंचों पर आपने अपने काव्य को प्रस्तुत करके अपने कौशल को परिभाषित किया है । आपका आत्मकथ्य हमें बोध कराता है कि आप कितनी विपरीत परिस्थितियें से गुजरी हैं तब कहीं आपने ये मकाम् हासिल किया है । आपके परिवार से आपको जो सहयोग मिला उस पर आपने पूरी लगन से अपनी विधा से परिपूर्ण करते हुये अपने आप को सिद्ध किया । **महिला दिवस पर रची गई रचना में महिलाओं की खूबियों बड़े ही रोचक तरीके से काव्य में प्रस्तुत किया है । दूसरी रचना माँ पर रची है जो कि बहुत ही भावपूर्ण रचना है । बहुत सुन्दर । तीसरी रचना प्रेम प्यार में साजन सजनी के प्यार से ओतप्रोत कमाल की रचना है । बाग बगीचे का वर्णन करती अगली रचना वास्तव में बहुत खूब चित्रण किया है पेड़ पौधों हरियाली का जो कि अब कम होते जा रहे हैं । सम्मोहन कृति भी अपने कान्हा के रूप से सम्मोहित भाव दशा का चित्रण करती रचना । बहुत खूब । हुनर व शब्द रचनायें भी अपने आप में परिपूर्ण रचनायें है** । आप कमाल के रचनाकार हैं जो कि आपकी रचनायें बताती हैं । आप निरन्तर लेखन में खूब उन्नति करें हमारी **बहुत बहुत शुभकामनायें** ।

डॉ अनिल कुमार कोरी

4.

कवि विशेषांक में आदरणीय कीर्ति जी को मेरा सादर प्रणाम।
आपका आत्म कथ्य बहुत ही प्रेरक है जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए भी अपनी प्रतिभा को सबके सामने लाना बहुत ही मुश्किल होता है लेकिन

आपने वह कर दिखाया,।
आपकी पहली रचना-**"महिला दिवस "** कम शब्दों में बहुत सुन्दर रचना है महिला जीवन के बारे में ।
आपकी दूसरी रचना-**"माँ "** बेहद भावपूर्ण रचना है, एक बेटी के लिए माँ का प्यार।
आपकी तीसरी रचना-**"प्रेम -प्यार "** पाया जबसे तेरा प्यार। बहुत ही सुंदर रचना है ।
आपकी चौथी रचना-**"बाग बगीचा "**न सिर्फ बच्चों के लिए बल्कि हम सबके लिए भी प्रेरक है।
आपकी पाँचवी रचना- **सम्मोहन** प्रेम की अभिव्यक्ति है ।
आपकी छठवीं रचना-**हूनर** मुझे सबसे ज्यादा पसंद आई,काश ऐसा हुनर इंसान भी सीखता,बहूत सुन्दर रचना है ।
आपकी अंतिम रचना में तो **शब्दों का प्रयोग** और उसकी सार्थकता को दर्शाया गया है जो बहूत ही सुंदर रचना है। आपकी लेखनी यूँ ही चलती रहे **मेरी ढेर सारी शुभकामनायें ।**

मीना विवेक जैन

5.

भारतीय साहित्यिकाश के एक देदीप्यमान नक्षत्र दादा माखनलाल चतुर्वेदी की जन्मस्थली, सुश्री कीर्ति प्रदीप वर्मा जी की कर्मस्थली और रचनास्थली बनी, यह सौभाग्य की बात है। **कीर्ति जी का सृजन बीज उनके अपने अनुसार शालेय भूमि में ही अंकुरित हुआ, किंतु बीच में पारिवारिक उत्तदायित्वों के कारण पल्लवित नहीं हो सका। फिर एक बार अनुकूल वातावरण और प्रोत्साहन की खाद पा कर न केवल पल्लवित हुआ अपितु पुष्पित भी होने लगा।**
विभिन्न सामाजिक सरोकारों के चलते उनकी कलम ने खुद को विधा विशेष में ही सीमित नहीं किया, बल्कि विविधवर्णा होती गयी। "महिला

दिवस","माँ", "प्रेम-प्यार, "बाग बगीचा" आदि उनके इन्हीं सरोकारों की भावनात्मक अभिव्यक्तियां हैं। कीर्ति जी का लेखन सहज और सरल है। अमिधात्मक है। इस वजह से बिंबों और प्रतीकों के प्रति आग्रही नहीं हैं वे। बिना उलझाव के अपनी बात कह जाती हैं। यह सरलता ही उनकी विशेषता भी है।

उनकी लेखनी अनवरत चलती रहे, यही कामना है।

उन्हें **बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।**

"सत्यप्रसन्न"

6.

आदरणीया बहन कीर्ति वर्मा जी की रचनाएं पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं व्यक्तिगत रूप से बहन कीर्ति वर्मा जी को जानता हूं कई मंचों पर साथ रचना पाठ किया है आज उनकी नवीन रचनाओं को पढ़ कर सुखद अनुभूति हुई।

१ महिला दिवस पर प्रेषित रचना में आपने आज की वास्तविकता को कहा है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की वेदना का सटीक चित्रण नजर आ रहा है।

दूसरी रचना मां में आपने एक वृद्धा मां का जिक्र किया है वास्तव में मां वह निधि है जो अपने बच्चों की खुशियों में भी आंसू बहाती है और ग़म में भी।

बेटी की बिदाई पर पति को सम्हालना और बाद में खुद ही बेटी की याद में आंसू बहाना यह एक मां की ममता ही हो सकती है।

वृद्धावस्था में मां का रुदन शायद इस बात का प्रतीक है कि अब जीवन के अंतिम पड़ाव पर खिली हुई बगिया को छोड़ कर जाना होगा।

संभवतः आपने अपनी रचना में यही भाव पिरोने का प्रयास किया है।।

आपकी तीसरी रचना में आपने नायिका के मन के भावों का बिम्बों के माध्यम से कहने का प्रयास किया है।और नायक के स्नेह को नायिका ने

सर्वोपरि बताया है और अपनी सारी ख़ुशियां नायक को समर्पित की हैं।
चौथी रचना में आपने अपने प्रर्यावरण प्रेम का परिचय दिया है और आधुनिकता पर कटाक्ष भी किया है। तथा भावी पीढ़ी को प्रर्यावरण बचाने के लिए प्रेरित किया है।।
पांचवीं रचना में आपने कृष्ण की भक्ति में लीन एक गोपी के भावों को व्यक्त किया है।
छठवीं रचना में आपने प्रकृति के विभिन्न रुपों का बखान किया है तथा यह कहने का प्रयास किया है कि प्रकृति अपने गुणों का त्याग नहीं करती किंतु इंसान अपने गुण त्याग देता है।
और अंत में आपने शब्दों की महिमा बताई है।
मेरे मतानुसार आपकी आपके भाव पूर्ण लेखन के लिए मैं आपको नमन करता हूं। **बहुत बहुत बधाई एवं साधुवाद**।

भरत सिंह रावत

7.

आज की उत्सवमूर्ति कीर्ति जी का सादर वंदन, **अभिनंदन**
आपका आत्मकथ्य पढ़ कर लगा मानो मेरी कहानी हो । मैं भी एकल नौकरी पेशा परिवार से संयुक्त परिवार में आई आपकी स्थिति समझ सकती हूँ ।
आपकी रचनाएँ जीवन के अलग अलग पहलुओं को दर्शाती हैं ।
महिला दिवस पर लिखी रचना में नारी की दशा का सुंदर चित्रण। **माँ** में आपने एक माता की व्यथा लिखी अच्छी रचना। माँ ऐसी ही होती है ।
प्रेम-प्यार में आपने अपने प्रियतम के आने से आने वाली बाहर का बेहद ख़ूबसूरती से चित्रण किया । **बाग बग़ीचा** जहाँ एक ओर वृक्षरोपन संदेश देती वहीं स्वच्छता का पाठ सिखाती है । **हुनर, शब्द , सम्मोहन** अच्छी रचनाएँ हैं **आपकी साहित्यिक यात्रा की मंगल कामनाएँ ।**

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दी ग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com